493 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 42
द्वितीय अंक
सितम्बर 2019

इस अंक में...

11 सम्पादकीय
12 राष्ट्रीय घटनाक्रम
20 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 आर्थिक-वाणिज्यिक परिदृश्य
28 नवीनतम सामान्य ज्ञान
33 राज्य समाचार
35 खेलकूद
41 इंगलैण्ड पहली बार आई.सी.सी. विश्व कप का विजेता
45 रोजगार समाचार
46 युवा प्रतिभाएं

फोकस

55 (1) शून्य बजट प्राकृतिक खेती
57 (2) चक्रीय अर्थव्यवस्था
59 (3) व्यवहारात्मक अर्थशास्त्र की व्यवहार्यता
61 स्मरणीय तथ्य
64 विश्व परिदृश्य
69 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
72 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं

लेख

75 समसामयिक लेख—पत्थलगड़ी : परम्परा और मौजूदा स्वरूप
77 अन्तर्राष्ट्रीय लेख—ओआईसी सम्मेलन में भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत : इस्लामी देशों में भारत की बढ़ती स्वीकार्यता
78 शिक्षा लेख—नई शिक्षा नीति : त्रिभाषा फॉर्मूले को लेकर विवाद
81 पर्यावरणीय लेख—(i) जन्तुओं का उद्‌भव एवं विकास
84 (ii) एवरेस्ट पर कचरा : पर्यावरण के लिए गम्भीर खतरा
85 संवैधानिक लेख—(i) भारतीय संविधान और प्रेस की स्वतन्त्रता
87 (ii) संविधान पर गांधी के आदर्श मूल्यों की प्रतिच्छाया
89 सामरिक सुरक्षा लेख—वायुसेना की बेमिसाल ताकत बनेगा चिनूक
90 प्रौद्योगिकी लेख—सूचना संचार तकनीकी और शिक्षा का एकीकरण
94 सार संग्रह

सामान्य अध्ययन

98 (i) यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2019
102 (ii) हरियाणा पी.एस.सी. प्रारम्भिक परीक्षा, 2017
109 (iii) राष्ट्रीय रक्षा अकादमी परीक्षा, 2018
116 (iv) उत्तर प्रदेश न्यायिक सेवा सिविल जज (जूनियर डिवीजन) परीक्षा, 2018
125 (v) मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा मण्डल समूह-2 (उपसमूह-3), कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी, मत्स्य निरीक्षक आदि पदों के लिए संयुक्त भर्ती परीक्षा, 2018
137 (vi) एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा, 2018
144 उत्तराखण्ड वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान
147 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
149 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
151 कोर्स ऑन कम्प्यूटर कॉन्सेप्ट्स—वस्तुनिष्ठ प्रश्न
154 ऐच्छिक विषय—(i) भूगोल—उत्तर प्रदेश प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2016
161 (ii) शारीरिक शिक्षा—उत्तर प्रदेश प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक भर्ती परीक्षा, 2016

विविध/सामान्य

166 वार्षिक रिपोर्ट 2017-18— भारतीय डाक सेवा क्षेत्र में ग्रामीण व्यवसाय, सतर्कता प्रशासन, मानव संसाधन विकास एवं वित्तीय सेवाएं सम्बन्धी तथ्य—एक दृष्टि में
168 सामान्य जानकारी—विधि तथा न्याय पर आधारित महत्वपूर्ण समसामयिक घटनाक्रम
171 तर्कशक्ति—आई.बी.पी.एस. बैंक विशेषज्ञ अधिकारी (आई.टी.) प्रारम्भिक परीक्षा, 2017
177 संख्यात्मक अभियोग्यता—सेबी असिस्टेंट मैनेजर परीक्षा, 2018
182 क्या आप जानते हैं ?
183 अपना ज्ञान बढ़ाइए
184 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—संसदात्मक शासन प्रणाली के सफल संचालन हेतु मजबूत विपक्ष का होना आवश्यक है
185 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—भारत में भाषाई विविधता और देश की राजनीति पर उसका प्रभाव
187 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—482 का परिणाम
188 वार्षिकी—(i) नवीनतम सामान्य ज्ञान
200 (ii) खेलकूद

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

तृतीय नेत्र का उपयोग कीजिए

Opportunity Knocks only Once.

वैज्ञानिकों के अनुसार पीयूष ग्रन्थि (Pituitary gland) ही तथाकथित तीसरी आँख थी, लेकिन हम जिस तृतीय नेत्र अथवा शिव के तृतीय नेत्र की बात करते हैं, वह नेत्र अभी भी सुरक्षित है. वह भौतिक अवयव न होकर एक आत्मिक वृत्ति अथवा आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत है–वह हमारे चर्म चक्षुओं का विषय न होकर अनुभूति का विषय अथवा हृदय की आँखों का विषय है. वास्तविक जगत् के पदार्थ रूप के स्थान पर उसके ऊर्जा स्वरूप को देखने की वृत्ति है. शिवजी को त्रयम्बक कहा जाता है, क्योंकि वह बाह्य एवं दृश्यमान दो नेत्रों के अतिरिक्त एक तीसरा नेत्र भी धारण करते हैं. यह आन्तरिक ज्ञान अथवा आध्यात्मिक ज्ञान का नेत्र है. बाह्य अथवा स्थूल शरीर में स्थित जो दो आँखें हैं, वे जगत् की संवेदनाओं को ग्रहण करके हमारे मस्तिष्क पर विशेष प्रकार के प्रभाव उत्पन्न करके दृष्टिविधान करते हैं, यानी इनके सहारे एक विशेष प्रक्रिया द्वारा हम बाह्य जगत् का दर्शन करते हैं, ये आँखें सत्यानुभूति न करके मात्र वह देखती हैं, जो ऊपरी सतह पर है. भौतिक ज्ञान के सन्दर्भ में भी इनकी सीमाएं वस्तु के बाह्य रूप तक सीमित रहती हैं, आन्तरिक संरचना अथवा उसके सत्य स्वरूप के दर्शनार्थ हमें तृतीय नेत्र की अपेक्षा रहती है, उसके सक्रिय होने पर ही इस सत्य की अनुभूति कर सकते हैं. प्रत्येक मनुष्य को इस तृतीय नेत्र का वरदान प्राप्त है. उसका उपयोग करके अथवा उक्त वरदान का लाभ उठाकर आप और हम सभी वस्तुजगत् के आन्तरिकरूप की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं. आन्तरिक ज्ञान के अभाव में हमारा ज्ञान सतही अथवा अपूर्ण ही कहा जाता है. मात्र पुस्तकें पढ़कर अथवा किसी विद्वान् के प्रवचन सुनकर हम वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं, क्योंकि सूचना प्राप्त कर लेना 'जानना' तो नहीं है. पूरी जानकारी के लिए हम जीवन-व्यवहार में भी वस्तु को उलट-पलट कर देखना चाहते हैं और अपनी सामर्थ्य के अनुसार पूरी तरह आश्वस्त होना चाहते हैं. अतः जीवन और जगत् के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए, उसके वास्तविक रूप के विषय में ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें इस तृतीय नेत्र की, अपने ज्ञान नेत्र की आवश्यकता होती है, तभी शिव एवं शिवत्व का दर्शन सम्भव हो सकता है.

●●●